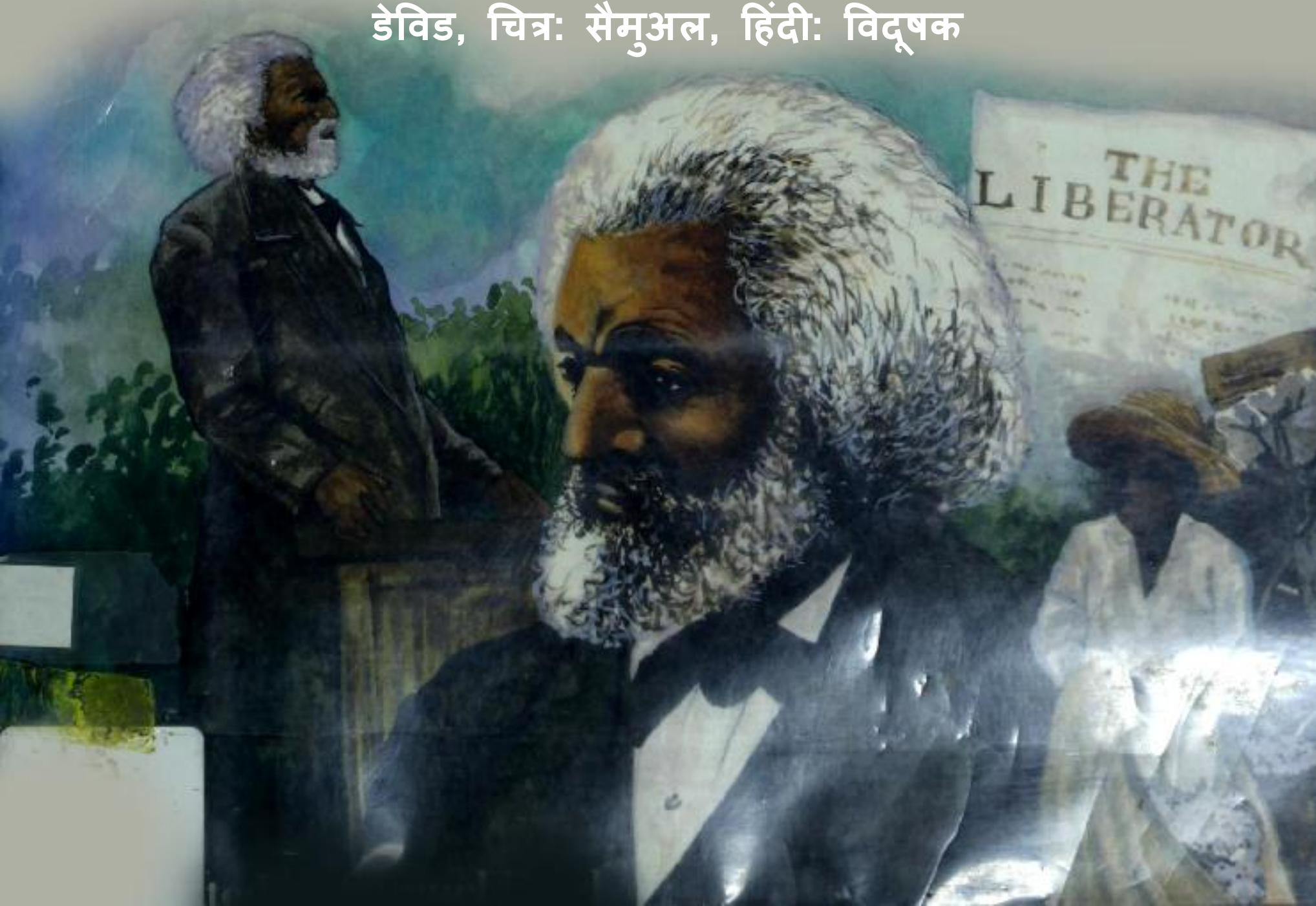


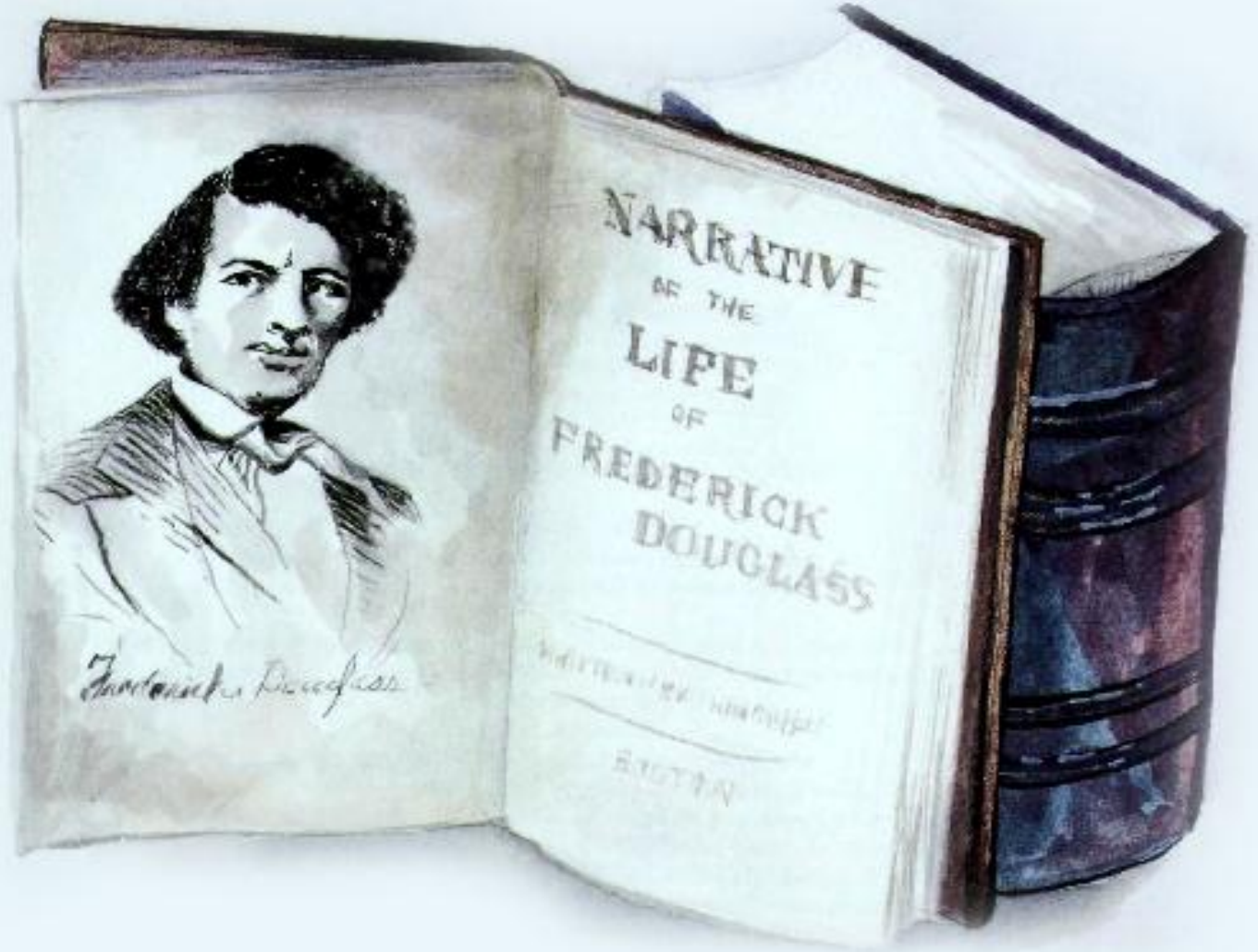
फ्रेडरिच डगलस

डेविड, चित्र: सैमुअल, हिंदी: विदूषक



फ्रेडरिच डगलस

डेविड, चित्र: सैमुअल, हिंदी: विदूषक

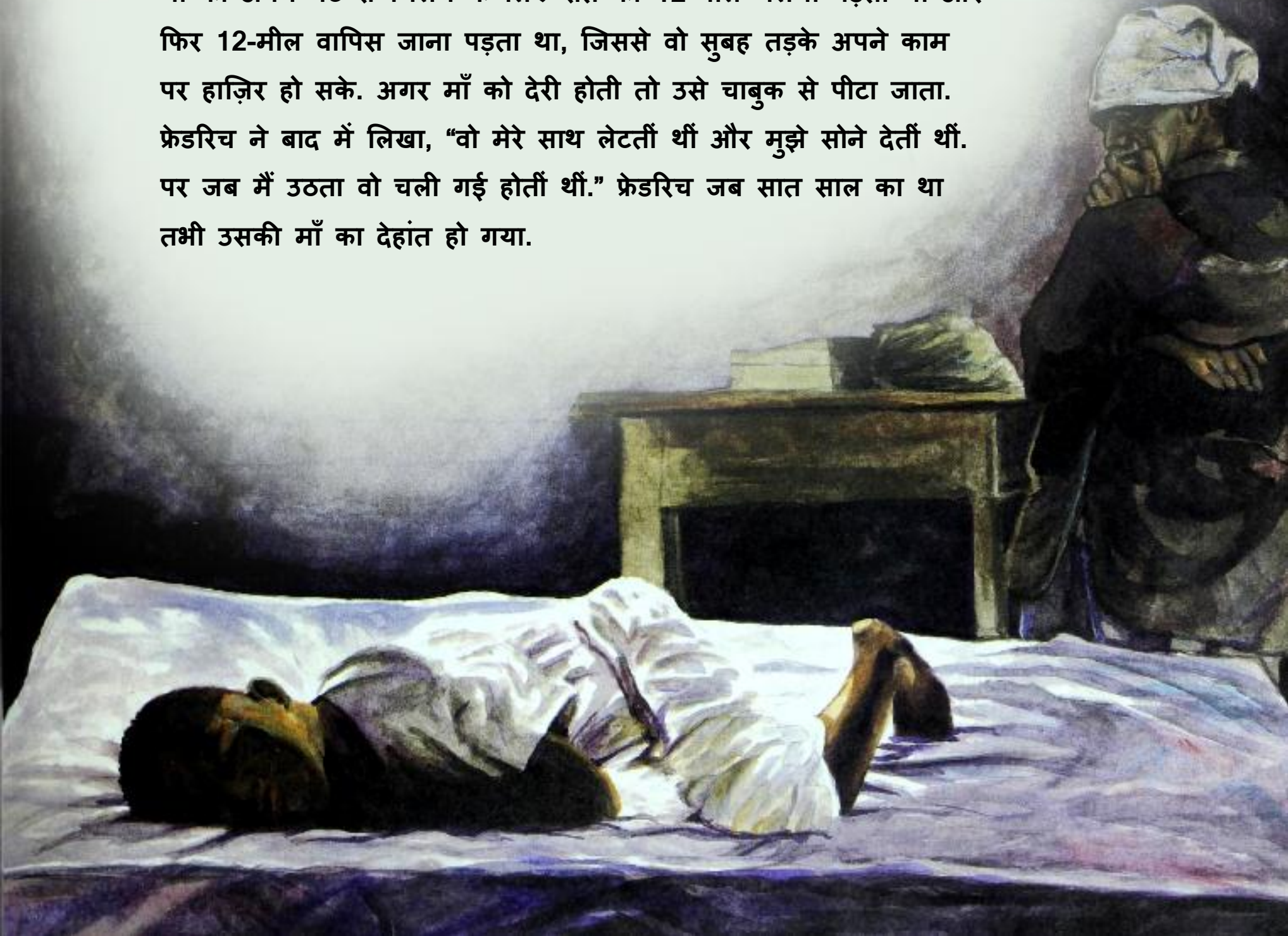




फ्रेडरिच डगलस फरवरी 1818 में टैलबोट कंट्री, मेरीलैंड में एक गुलाम पैदा हुआ. जिस फार्म पर वो पैदा हुआ वहां तम्बाखू, मक्का और गेहूं उगाया जाता था. माँ ने उसका नाम फ्रेडरिच ऑगस्टस वाशिंगटन बेली रखा.

फ्रेडरिच की माँ एक एफ्रो-अमेरिकन गुलाम थीं और उनका नाम हेरिएट बेली था. फ्रेडरिच को अपने पिता के बारे में कभी कुछ पता नहीं चला. पर उसे इतना पता था कि उसके पिता एक गोरे थे. कुछ लोगों के अनुसार फ्रेडरिच के पिता कप्तान आरोन अन्थोनी थे. वे फ्रेडरिच के पहले मालिक भी थे.

फ्रेडरिच के पैदा होने के बाद उसे नानी - बेट्सी बेली के पास रहने के लिए ले जाया गया. बाद में फ्रेडरिच अपनी माँ से, केवल 4-5 बार ही मिला. माँ को अपने बेटे से मिलने के लिए रात को 12-मील चलना पड़ता था और फिर 12-मील वापिस जाना पड़ता था, जिससे वो सुबह तड़के अपने काम पर हाज़िर हो सके. अगर माँ को देरी होती तो उसे चाबुक से पीटा जाता. फ्रेडरिच ने बाद में लिखा, “वो मेरे साथ लेटती थीं और मुझे सोने देती थीं. पर जब मैं उठता वो चली गई होती थीं.” फ्रेडरिच जब सात साल का था तभी उसकी माँ का देहांत हो गया.

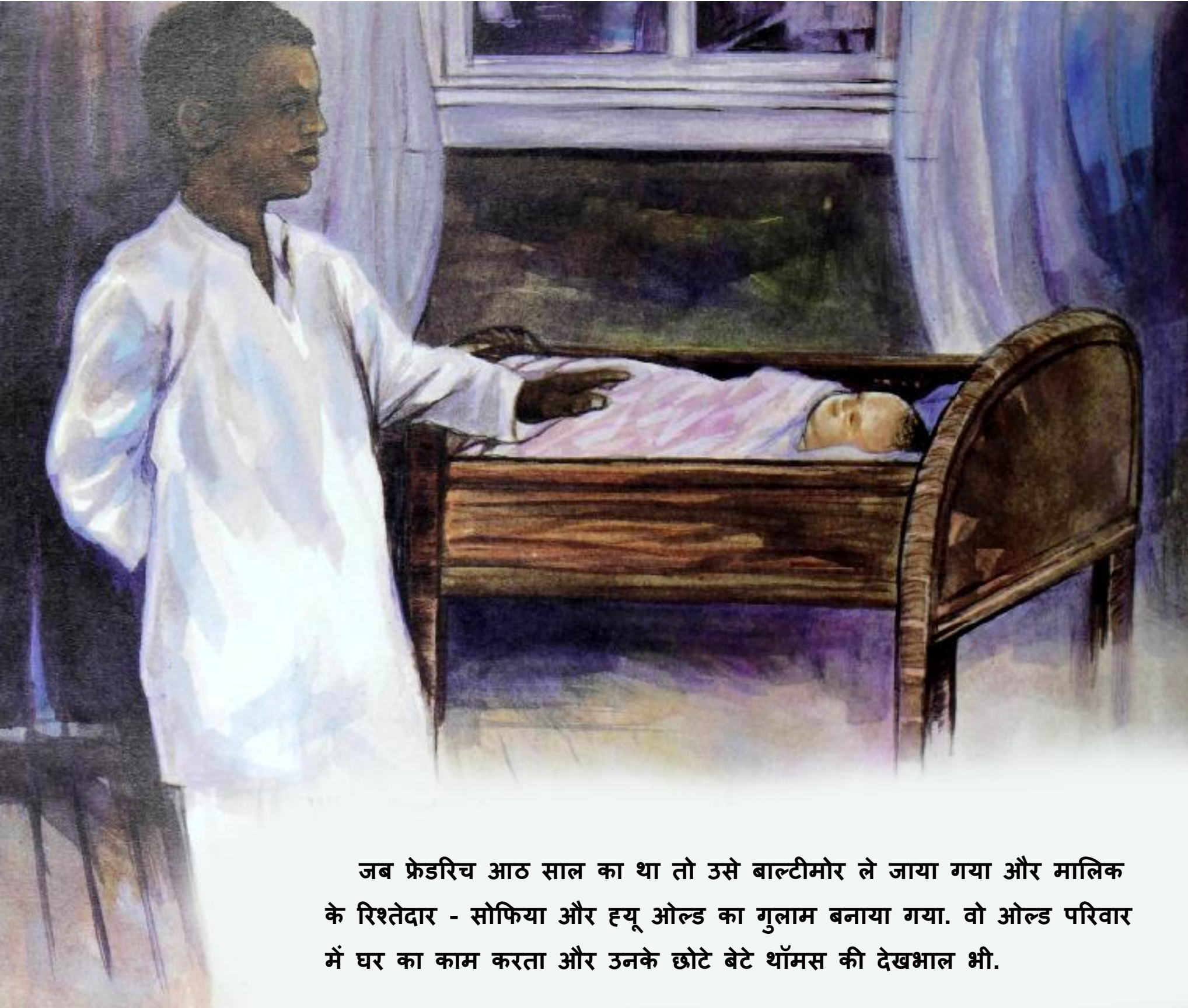




छह साल के उम्र में फ्रेडरिच को मालिक के घर में काम पर लगाया गया. उसने अपनी गुलामी की ज़िन्दगी के बारे में लिखा. “तपती गर्मी और कड़कती सर्दी में भी मुझे लगभग नंगा रखा जाता था – न जूते, न मोज़े, न जैकेट, न पतलून. मैं बस खुरदुरे कपड़े की एक कमीज़ पहनता था, जो मेरे घुटनों तक आती थी.” भोजन में उसे हर वक्त सिर्फ उबले मक्का का “मश” ही मिलता था.



अक्सर गुलामों की सुबह को पिटाई होती, तो फ्रेडरिच की आँख खुल जाती. जब पहली बार रone की आवाज से उसकी आँख खुली तो उसने अपनी चाची हेस्टर को, हुक सा लटके और चाबुक से पिटते हुए देखा. छोटा फ्रेडरिच यह देखकर इतना सहमा कि वो दौड़कर अलमारी में जाकर छिप गया.



जब फ्रेडरिच आठ साल का था तो उसे बाल्टीमोर ले जाया गया और मालिक के रिश्तेदार - सोफिया और ह्यू ओल्ड का गुलाम बनाया गया. वो ओल्ड परिवार में घर का काम करता और उनके छोटे बेटे थॉमस की देखभाल भी.



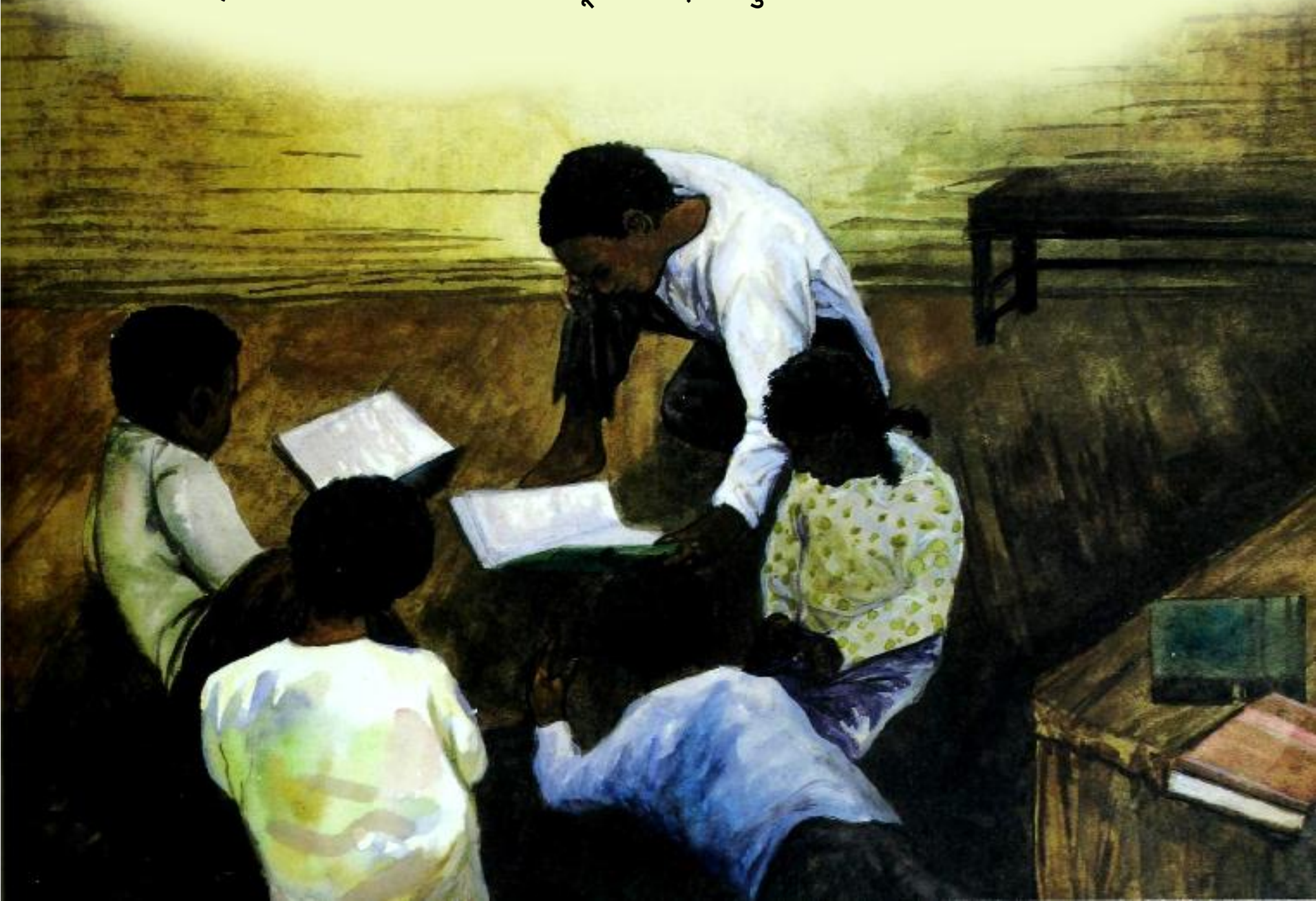
छोटा फ्रेडरिच बेली, सोफिया ओल्ड का पहला गुलाम था. सोफिया एक नेक दिल महिला थीं और उन्होंने फ्रेडरिच को अक्षरमाला सिखाई. जब सोफिया ने फ्रेडरिच को पढ़ना सिखाना शुरू किया तब पति ने उसे मना किया क्योंकि गुलामों को पढ़ाना कानून के खिलाफ था. ह्यू ओल्ड ने कहा, “गुलाम को मालिक की आज्ञा मानने के आलावा और कुछ नहीं आना चाहिए.”



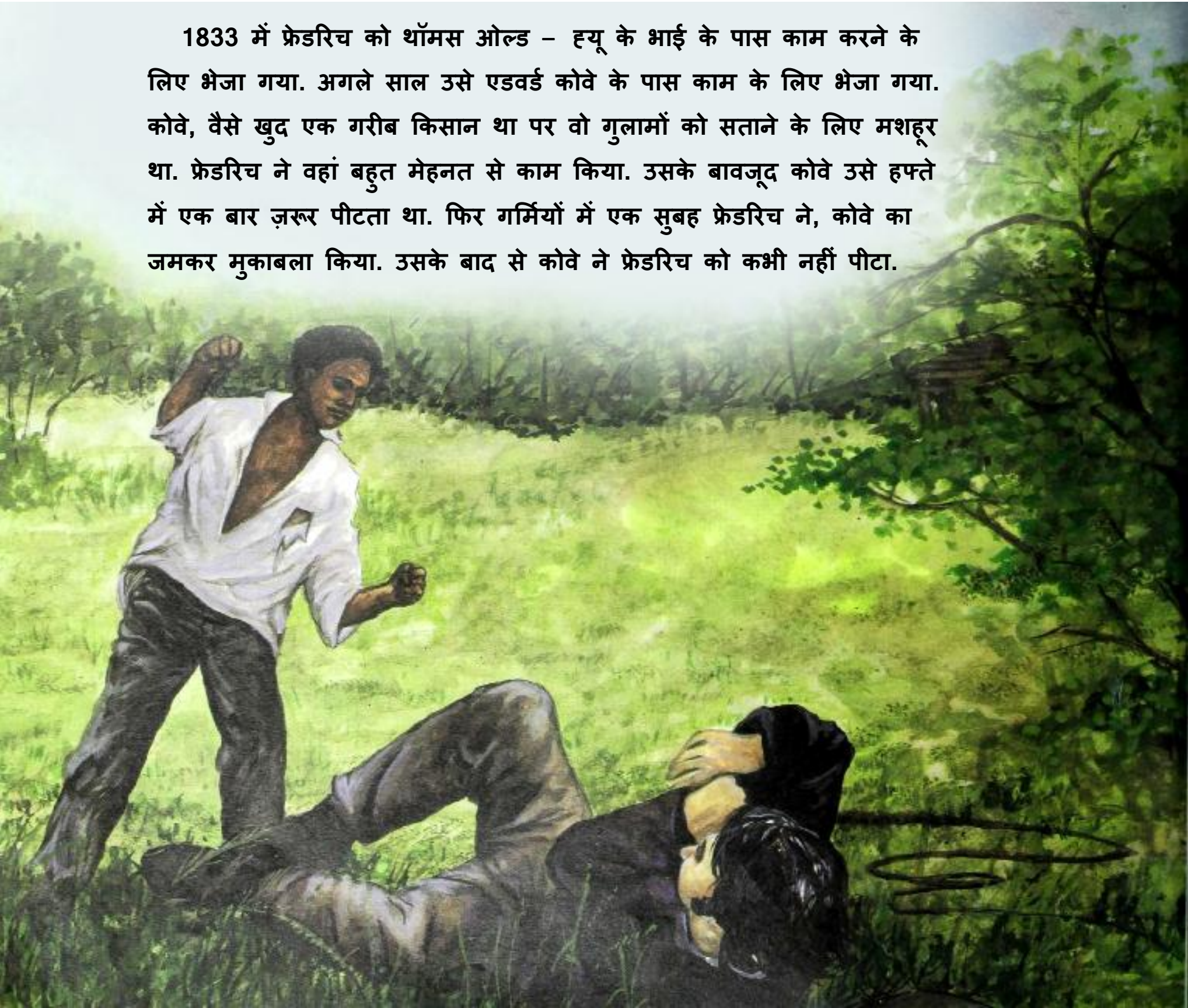
आंटी सोफिया ने फ्रेडरिच को पढ़ाना तो बंद कर दिया, पर फ्रेडरिच ने सीखना बंद नहीं किया. जब कभी वो बाहर किसी काम से जाता तो अपने साथ कोई किताब लेकर जाता. उसे सड़क पर जो गरीब गोरे लड़के मिलते उनसे वो पढ़ना सीखता.

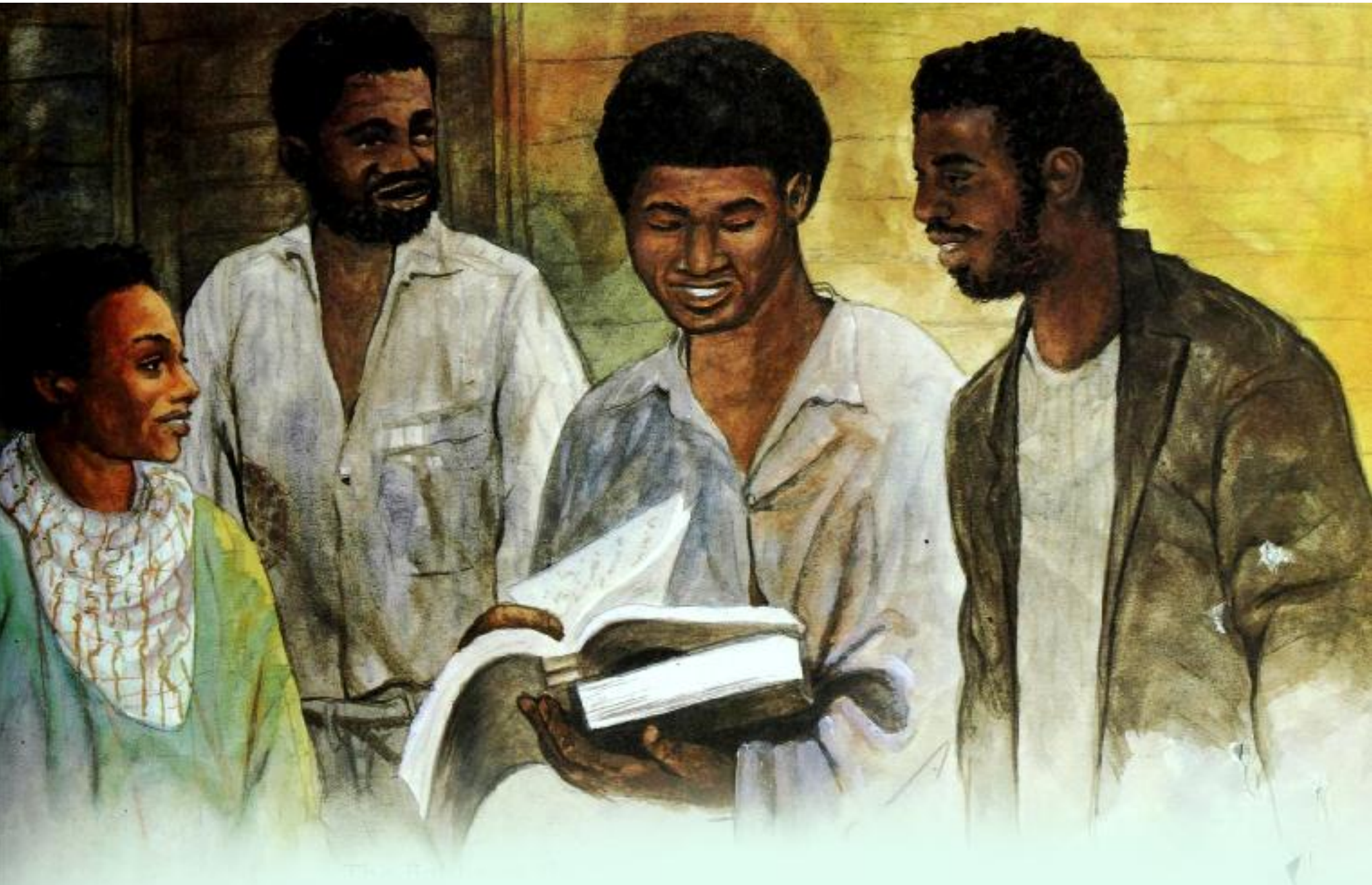
जब फ्रेडरिच बारह साल का था तो उसने उन गोरे लड़कों से कहा, “मैं ज़िन्दगी भर के लिए गुलाम हूँ!” फिर उसने पूछा, “क्या मुझे भी, तुम जैसे आज़ाद रहने का अधिकार नहीं है?”

फ्रेडरिच बाइबिल पढ़ता और चर्च द्वारा संचालित अश्वेत बच्चों के स्कूल में पढ़ने जाता। चौदह साल की उम्र में उसने उसी स्कूल में पढ़ाना शुरू किया।



1833 में फ्रेडरिच को थॉमस ओल्ड - ह्यू के भाई के पास काम करने के लिए भेजा गया. अगले साल उसे एडवर्ड कोवे के पास काम के लिए भेजा गया. कोवे, वैसे खुद एक गरीब किसान था पर वो गुलामों को सताने के लिए मशहूर था. फ्रेडरिच ने वहां बहुत मेहनत से काम किया. उसके बावजूद कोवे उसे हफ्ते में एक बार ज़रूर पीटता था. फिर गर्मियों में एक सुबह फ्रेडरिच ने, कोवे का जमकर मुकाबला किया. उसके बाद से कोवे ने फ्रेडरिच को कभी नहीं पीटा.





उस लड़ाई ने फ्रेडरिच की गुलाम ज़िन्दगी को बदला. “पहले मैं कुछ नहीं था,” उसने कहा, “फिर मैं एक आदमी बन गया.”

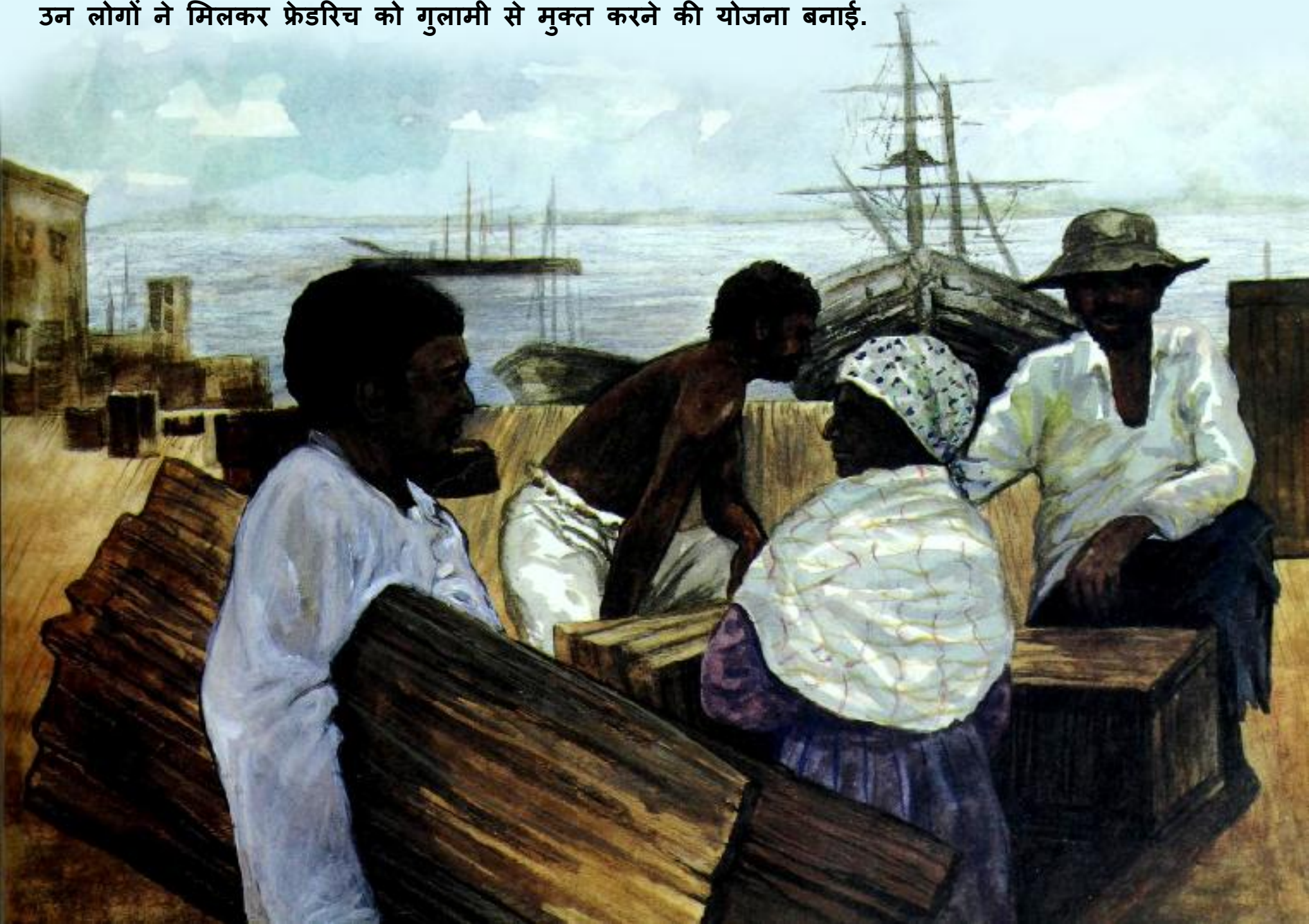
1 जनवरी, 1835 को, फ्रेडरिच को विलियम फ्रीलैंड के लिए काम करने भेजा गया. इतवार वाले दिन गुलामों की छुट्टी होती और उस दिन उन्हें कोई काम नहीं करना होता था. फ्रेडरिच ने एक गुप्त स्कूल खोला और जिसमें उसने गुलामों को पढ़ना सिखाया.



फ्रेडरिच के दिल में आज़ाद होने की गहरी तमन्ना थी. उसने और कुछ अन्य गुलामों ने, एक नाव में पलायन करने की योजना बनाई. पर किसी ने उनकी चुगली कर दी, जिससे फ्रेडरिच को जेल में डाल दिया गया. वो अपेक्षा कर रहा था कि उसे दक्षिण के किसी गुलाम मालिक को बेंच दिया जायेगा जहाँ फ्रेडरिच को कपास के खेतों में मेहनत करनी पड़ती. फ्रेडरिच के लिए वो ज़िन्दगी मौत जैसी थी. पर फ्रेडरिच को दुबारा उसके पुराने मालिक ह्यू ओल्ड के पास काम करने वापिस भेजा गया.

फिर फ्रेडरिच ने एक पानी के जहाज़ कारखाने में काम करना शुरू किया. वो अपनी सारी कमाई ह्यू ओल्ड को सौंप देता.

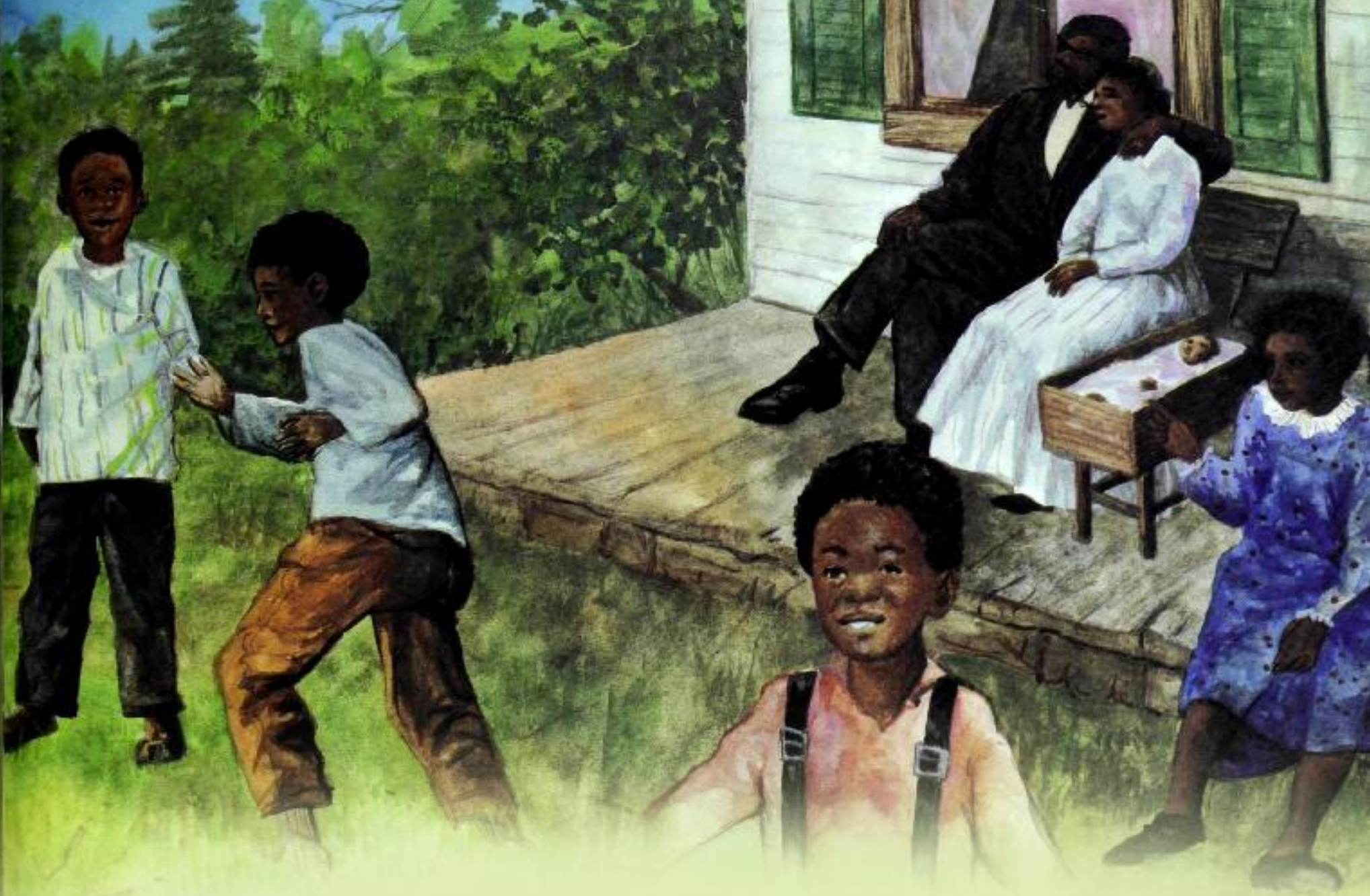
बाल्टीमोर में फ्रेडरिच की भेंट कई आज़ाद अफ्रीकन-अमेरिकंस से हुई, उनमें **एना मुरे** भी शामिल थीं. उन लोगों ने मिलकर फ्रेडरिच को गुलामी से मुक्त करने की योजना बनाई.





फ्रेडरिच ने उत्तर की ओर ट्रेन से सफ़र की योजना बनाई. एना ने उसे यात्रा के लिए पर्याप्त धन दिया. एक आज़ाद अफ्रीकन-अमेरिकन नाविक ने, फ्रेडरिच को कुछ कागज़ात दिए जिनके अनुसार वो गुलाम नहीं था.

फ्रेडरिच ने तीन ट्रेनों, तीन नावों और एक स्टीम-बोट में सफ़र किया. अंत में वो मुक्त होकर न्यू-यॉर्क सिटी पहुंचा. वहां पर गुलाम पकड़ने वालों से बचने के लिए उसने सबसे पहले अपना नाम **“बेली”** से **“जॉनसन”** में बदला. बाद में उसने अपना नाम **“डगलस”** रखा.



न्यू-यॉर्क पहुँचने के बाद फ्रेडरिच ने एना मुरे को भी वहां बुलाया. 15 अगस्त, 1838 को उन दोनों ने शादी की. फिर वे उत्तर में न्यू-बेडफ़ोर्ड, मेसाचुसेट्स में जाकर बसे. फ्रेडरिच और एना के पांच बच्चे हुए – रोसेट्टा, लेविस, फ्रेडरिच जूनियर, चार्ल्स और एना.



न्यू-बेडफ़ोर्ड में फ्रेडरिच ने जहाजों से माल लादने-उतारने, कोयला ढोने और चिमनी सफाई का काम किया. फ्रेडरिच अब खुश था क्योंकि अब उसे अपना वेतन अपने मालिक को नहीं देना पड़ता था.



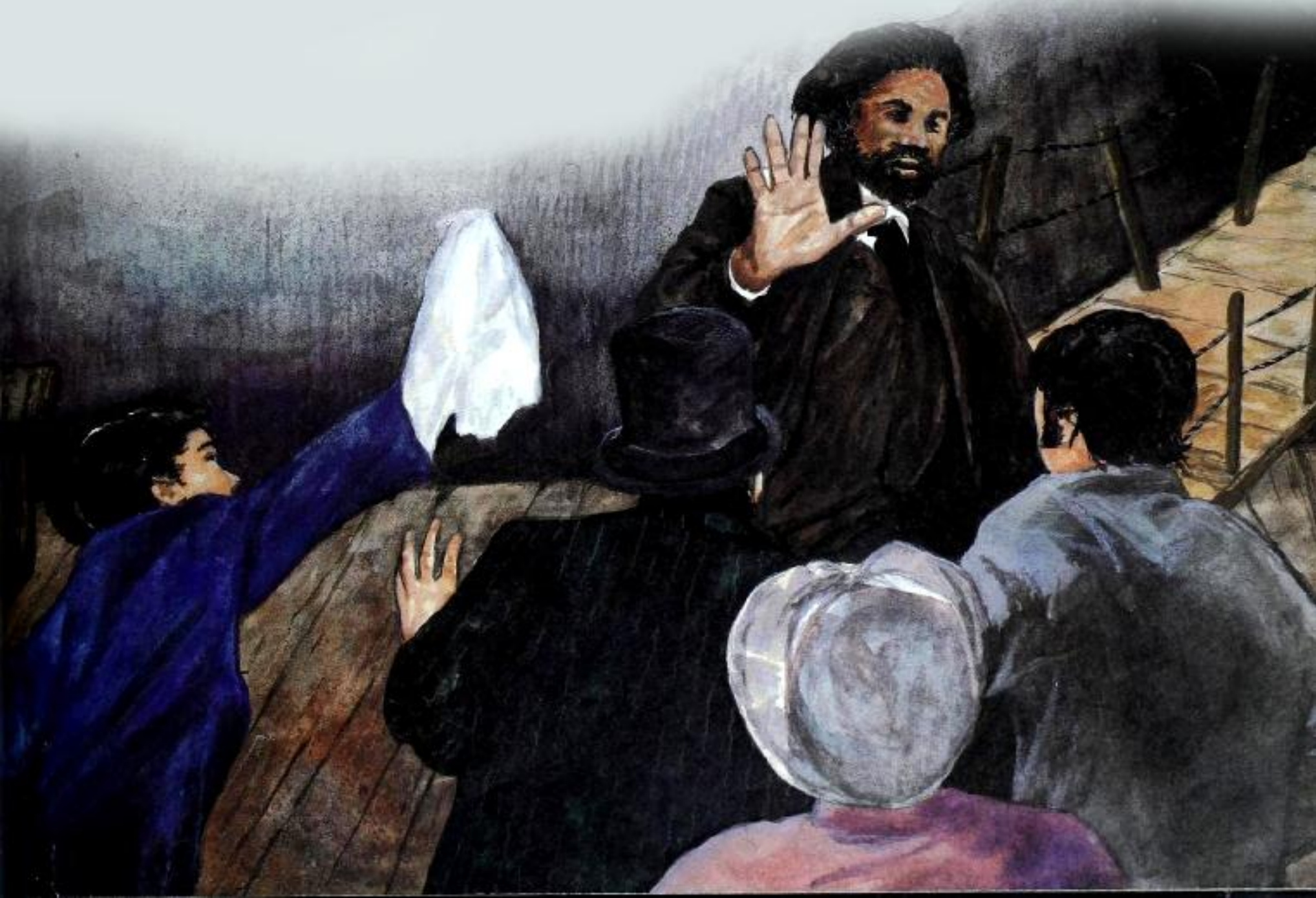
चार महीने न्यू-बेडफ़ोर्ड में रहने के बाद फ़्रेडरिच ने गुलामी की खिलाफ़त करने वाला एक अखबार **“लिब्रेटर”** पढ़ना शुरू किया. उसने बाद में लिखा, “उसे पढ़कर मेरी आत्म सुलगने लगी.”

1841 में फ़्रेडरिच डगलस की मुलाक़त अखबार के संपादक विलियम लियोड गैरिसन से हुई. गैरिसन ने फ़्रेडरिच को नौकरी दी जिसमें उसे अन्य शहरों में घूमना था और गुलामी की वहशियत के बारे में लोगों को बताना था और **“लिब्रेटर”** के लिया चंदा इकठ्ठा करना था.

1845 में अपनी आत्मकथा *“नैरेटिव ऑफ़ द लाइफ ऑफ़ फ्रेडरिच डगलस, एन अमेरिकन स्लेव”* प्रकाशित हुई. इस पुस्तक में फ्रेडरिच ने अपने मूल नाम - फ्रेडरिच बेली, और मालिक के असली नाम का प्रयोग किया. पर उससे फ्रेडरिच के पकड़े जाने का डर बढ़ा. इसलिए बचने के लिए वो इंग्लैंड चला गया. वहां भी गुलामी प्रथा के खिलाफ उसने कई भाषण दिए.



फ्रेडरिच डगलस का मानना था कि इंसान माल या संपत्ति नहीं होता, जिसका कोई व्यक्ति मालिक बन सके. बाल्टिमोर में ओल्ड दंपत्ति के पास अभी भी वो कागजात मौजूद थे जिनके अनुसार फ्रेडरिच उनका गुलाम था. फ्रेडरिच के कुछ मित्रों ने वो कागजात खरीद लिए. उसके बाद फ्रेडरिच पूरी तरह से मुक्त और आज़ाद हो गया. अब वो वापिस घर जा सकता था.



द नार्थ स्टार

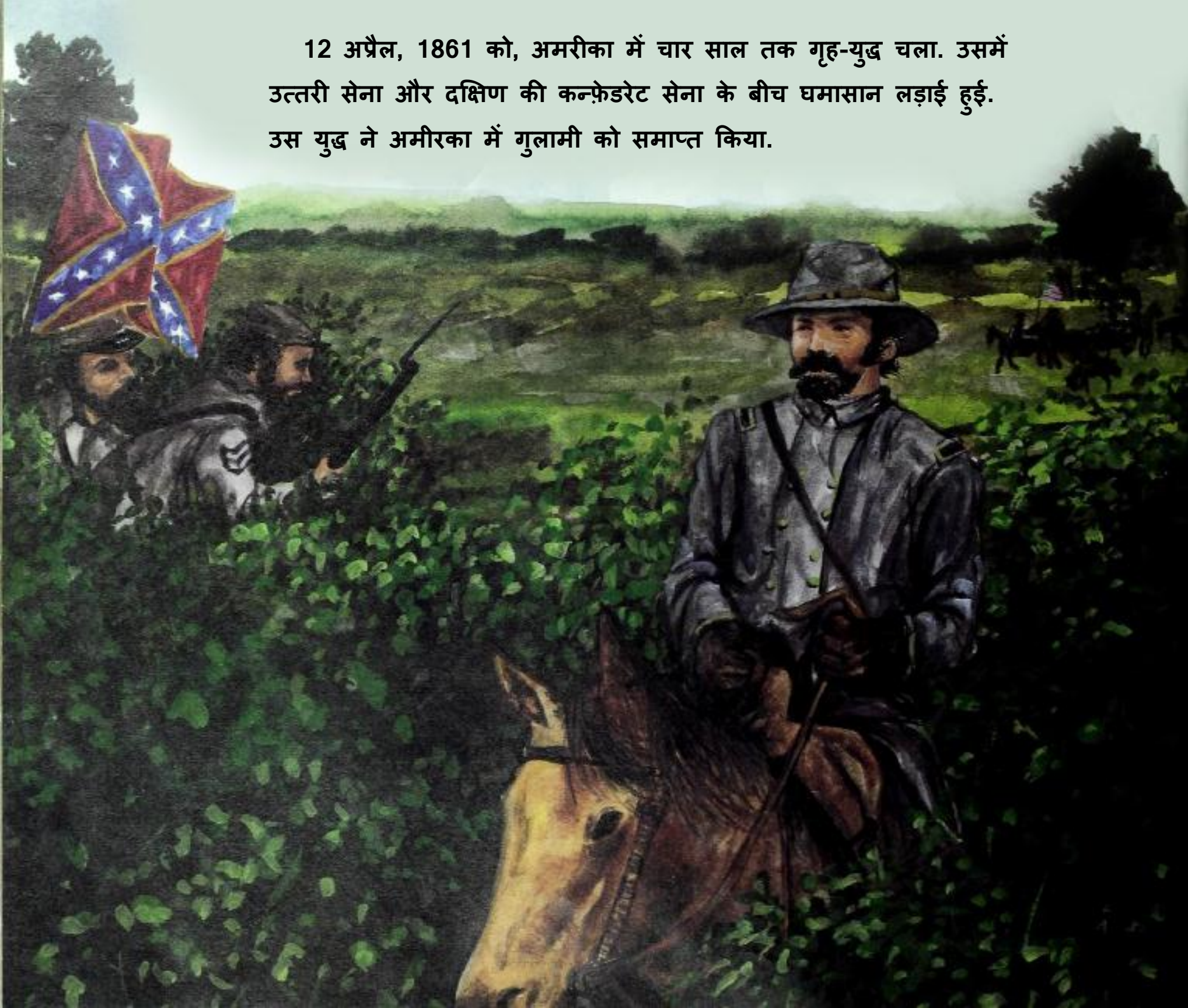


1847 में फ्रेडरिच अमरीका वापिस लौटा. वो रोचेस्टर, न्यू-यॉर्क में जाकर बसा और वहां उसने गुलामी के खिलाफ अपना अखबार **“द नार्थ स्टार”** छापना शुरू किया. बाद में उसका नाम **“फ्रेडरिच डगलस न्यूज़पेपर”** पड़ा.



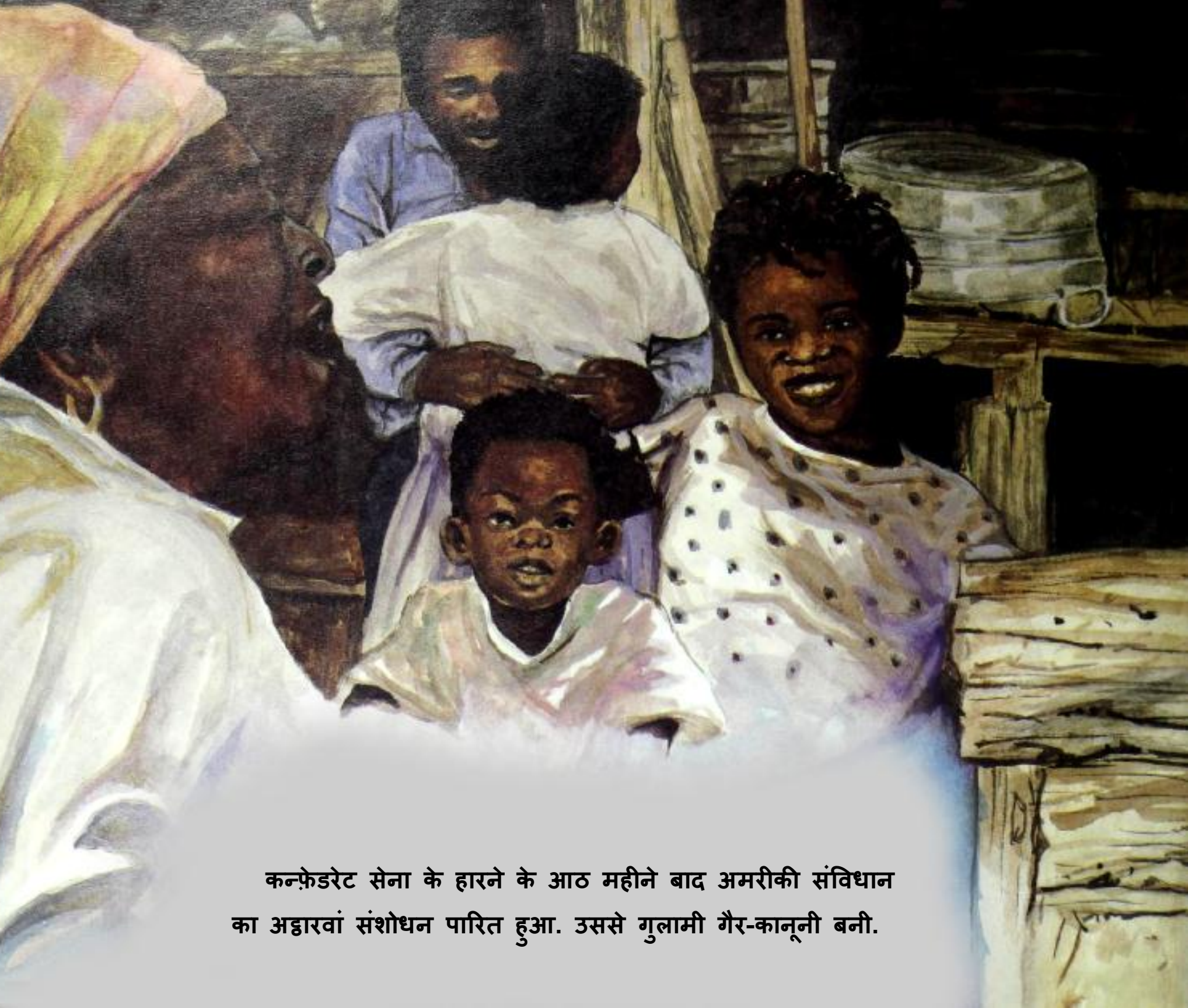
फ्रेडरिच ने उत्तरी अमरीका के राज्यों में नस्ल सम्बन्धी पूर्वाग्रहों और जुल्मों के बारे में जोरदार ढंग से लिखा. उसने महिलाओं के अधिकारों के बारे में भी लिखा. उसका घर **"अंडरग्राउंड रेलरोड"** में **"सुरक्षित घर"** बना. वहाँ उत्तर की ओर पलायन करने वाले अश्वेत गुलाम कुछ दिन ठहरकर आराम कर सकते थे.

12 अप्रैल, 1861 को, अमरीका में चार साल तक गृह-युद्ध चला. उसमें उत्तरी सेना और दक्षिण की कन्फेडरेट सेना के बीच घमासान लड़ाई हुई. उस युद्ध ने अमीरका में गुलामी को समाप्त किया.

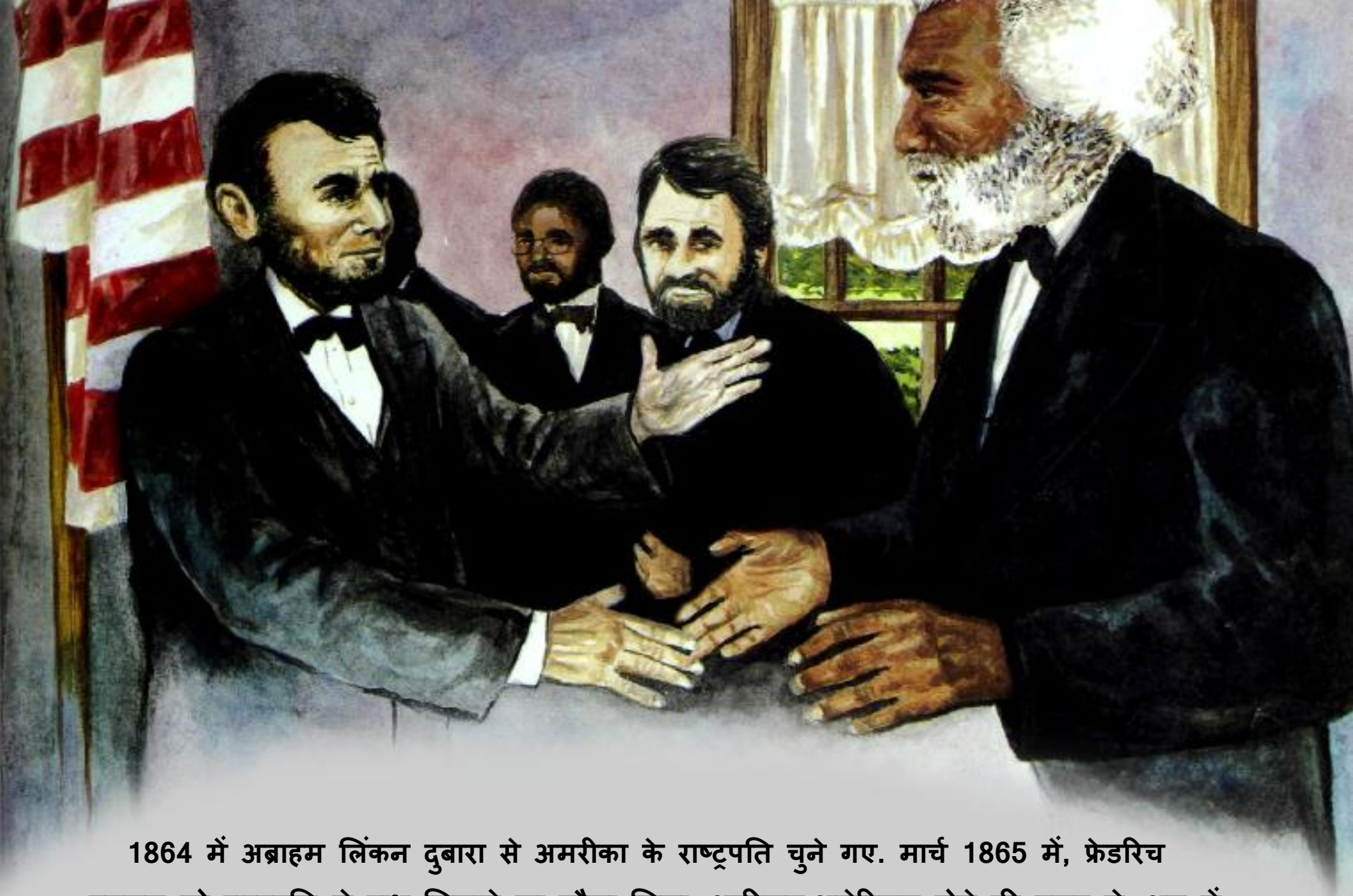


1863 में फ्रेडरिच डगलस ने यूनियन आर्मी (सेना) के लिए पहले अश्वेत सैनिकों की एक टुकड़ी जुटाने में मदद की. उसके तीन बेटे भी उस टुकड़ी में शामिल हुए. फ्रेडरिच डगलस को जल्द ही पता चला कि सेना में अश्वेत सैनिकों को, गोरों की तुलना में बहुत कम वेतन मिलता था. उन्हें सही ट्रेनिंग और उपकरण भी नहीं मिलते थे. फ्रेडरिच ने यह बात राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को बताई. राष्ट्रपति ने फ्रेडरिच डगलस से कुछ धीरज रखने को कहा. अफ्रीकन-अमेरिकन अश्वेत लोगों के अधिकारों की लड़ाई की प्रगति बहुत धीमी गति से ही आगे बढ़ी.

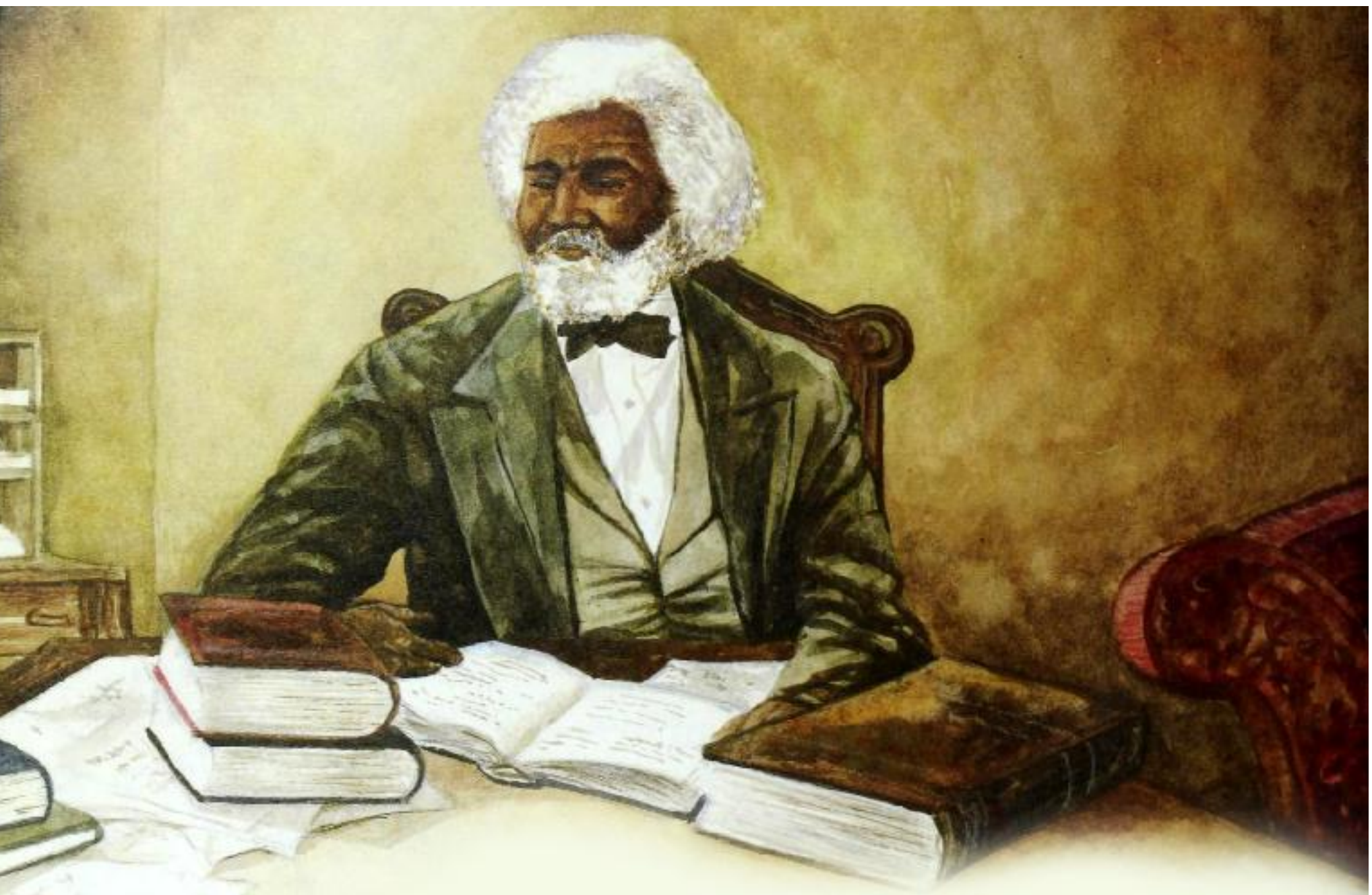




कन्फ़ेडरेट सेना के हारने के आठ महीने बाद अमरीकी संविधान का अठ्ठारवां संशोधन पारित हुआ. उससे गुलामी गैर-कानूनी बनी.

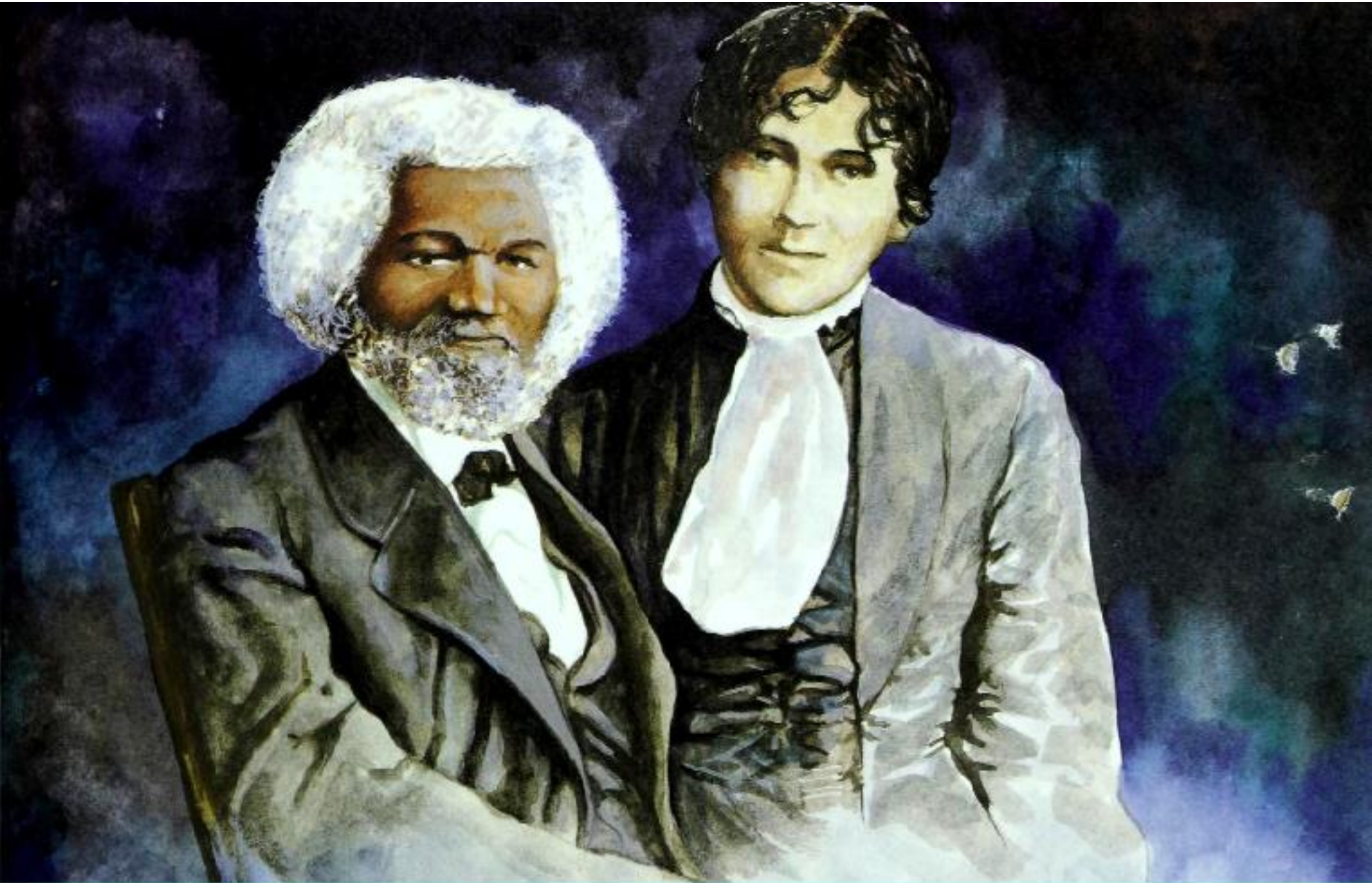


1864 में अब्राहम लिंकन दुबारा से अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए. मार्च 1865 में, फ्रेडरिच डगलस को राष्ट्रपति से हाथ मिलाने का मौका मिला. अफ्रीकन-अमेरिकन होने की वजह से, शुरू में उन्हें यह अनुमति नहीं मिली. पर राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने उन्हें वाइट-हाउस में आमंत्रित किया और जैसे ही फ्रेडरिच घुसे, राष्ट्रपति ने कहा, "देखो वो मेरा मित्र डगलस आ रहा है." उसके कुछ हफ्तों बाद 14 अप्रैल, 1865 को, राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को गोली मार दी गई. अगले दिन उनका देहांत हो गया.



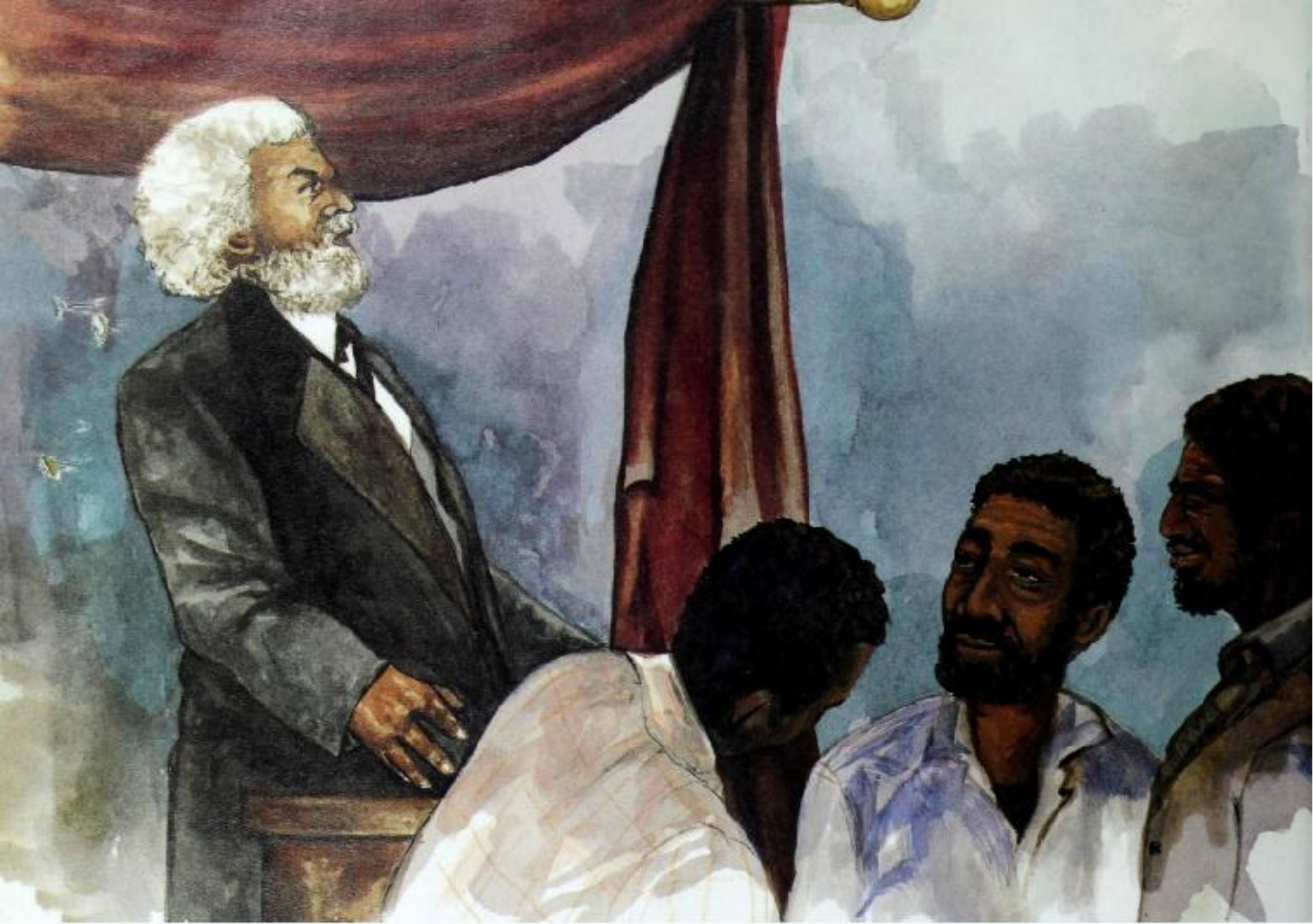
फ्रेडरिच डगलस ने दो अन्य पुस्तकें लिखीं **“माय बॉन्डेज एंड माय फ्रीडम”** जो 1855 में प्रकाशित हुई. दूसरी पुस्तक **“द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ फ्रेडरिच डगलस”** 1881 में प्रकाशित हुई.

1877 में फ्रेडरिच डगलस को **“मार्शल”** की उपाधि मिली. 1889 में फ्रेडरिच डगलस को **हेटी** (HAITI) का कौंसल-जनरल नियुक्त किया गया.



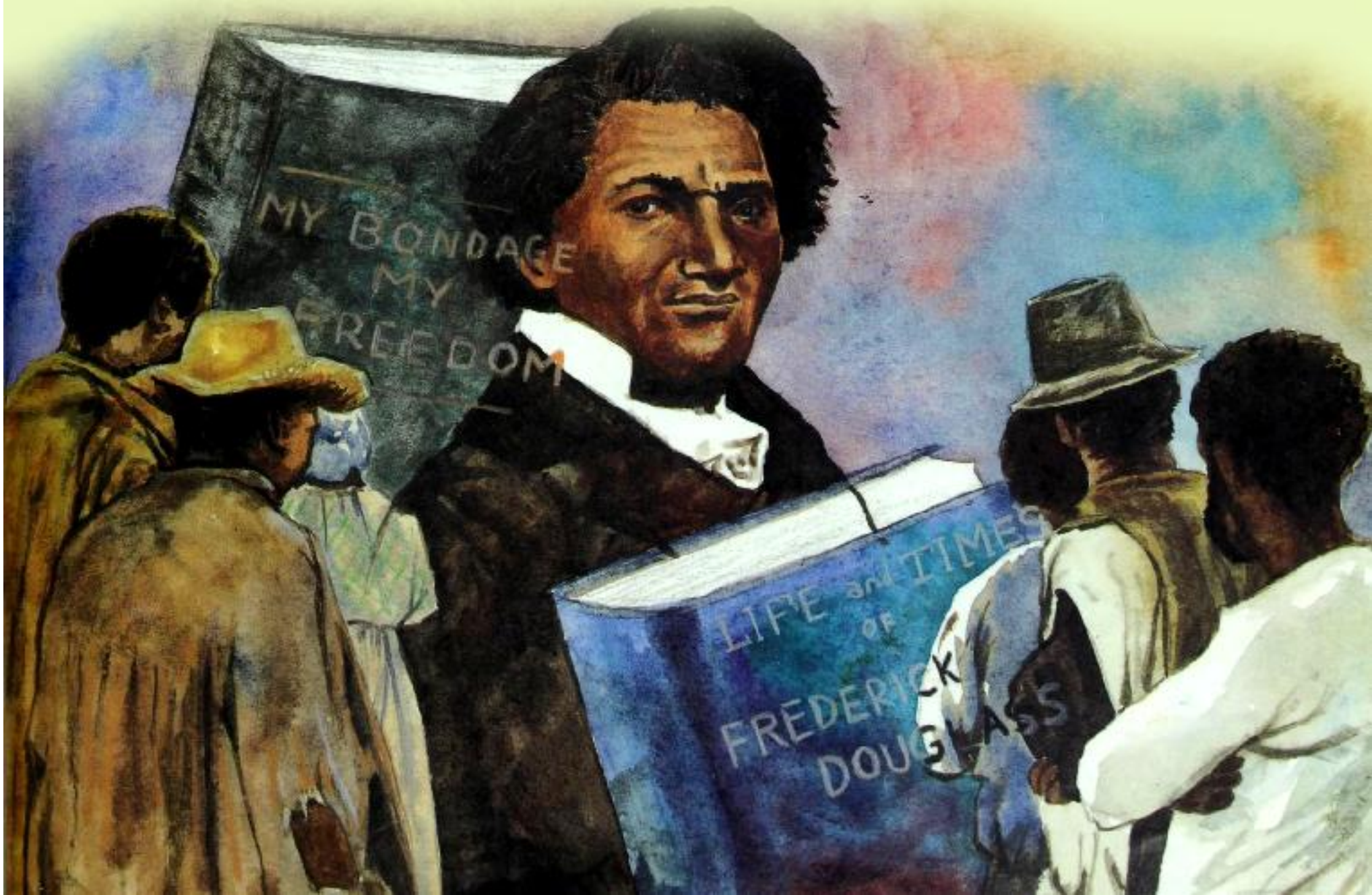
1882 में एना डगलस का देहांत हुआ. दो साल बाद फ्रेडरिच ने एक गोरी महिला हेलेन पिट्स से शादी की.

उस शादी से अश्वेत और गोरे दोनों परेशान हुए. हेलेन पिट्स ने कहा कि उन्होंने ऐसे आदमी से शादी की जिसे वो प्यार करती थीं. फ्रेडरिच डगलस ने लोगों से कहा कि उनकी पहली पत्नी, उनकी माँ जैसी ही अश्वेत थीं और उनकी दूसरी पत्नी पिता जैसी गोरी थीं.



अपने आखरी दिनों में फ्रेडरिच डगलस ने दक्षिण के राज्यों में अश्वेतों पर अत्याचार, जुल्मों और क़त्ल की घोर निंदा की. उन्होंने लिखा कि “दक्षिण से आने वाला हवा का हर झोंका, नीग्रो खून की खुशबू से लथपथ होता है.”

फ्रेडरिच डगलस ने गुलामी खत्म करने के आन्दोलन की अगुवाई की. उनकी उम्मीद थी कि एक दिन पूरे अमरीका में गोरे और अश्वेत एक-दूसरे के साथ प्रेम और शांति से रहेंगे. 20 फरवरी, 1895 को महिला-अधिकारों की एक बैठक में भाग लेने के बाद दिल के दौरों से उनका देहांत हुआ. उस समय वो 87 साल के थे.



महत्वपूर्ण तारीखें

- 1818 टैलबोट काउंटी, मेरीलैंड, अमरीका में जन्म.
- 1824 कप्तान आरोन अन्थोनी का गुलाम.
- 1826 ह्यू और सोफिया ओल्ड, बाल्टिमोर, मेरीलैंड का गुलाम.
- 1833 थॉमस ओल्ड का गुलाम.
- 1834 मालिक एडवर्ड कोवे से लड़ाई.
- 1835 विलियम फ्रीलैंड का गुलाम.
- 1836 मालिक ह्यू ओल्ड, बाल्टिमोर के पास वापसी. जहाज़ कारखाने में नौकरी.
- 1838 न्यू-यॉर्क के लिए पलायन. एना मुरे से शादी.
- 1841-45 विलियम लोयड गैरीसन के साथ **"लिब्रेटर"** अखबार में काम.
- 1845 **"नैरेटिव ऑफ़ द लाइफ़ ऑफ़ फ्रेडरिक डगलस, एन अमेरिकन स्लेव"** प्रकाशित.
- 1847 रोचेस्टर, न्यू-यॉर्क से खुद के अखबार **"नार्थ स्टार"** का प्रकाशन.
- 1863 यूनियन आर्मी के पहले अश्वेत दस्ते में शामिल.
- 1882 पत्नी एना मुरे का देहांत.
- 1884 हेलेन पिट्स से विवाह.
- 1889-91 **हेटी** (HAITI) में अमरीकी कौंसल-जनरल.
- 1895 20 फरवरी, को वाशिंगटन डी.सी. में देहांत.

लेखक का नोट

फ्रेडरिक डगलस की जन्मतिथि और गुलामी के काल की अन्य तिथियाँ सामायिक शोध पर आधारित हैं. यह तारीखें अन्य पुस्तकों - जिसमें फ्रेडरिक डगलस की खुद की जीवनी भी शामिल है, से कुछ भिन्न हैं. वैसे डगलस को उससे कोई खास आपत्ति नहीं होती. उन्होंने एक बार लिखा, “मुझे आजतक ऐसा कोई गुलाम नहीं मिला जो अपनी जन्म तारीख मुझे बता सके. अक्सर वो लोग फसल की कटाई, बुआई, वसंत, या पतझड़ का मौसम ही बता पाते थे.”

फ्रेडरिक डगलस को बहुत अल्प काल के लिए फ्रेडरिक जॉनसन के नाम से जाना गया. यह नाम महज़ दो हफ़्तों तक रहा. पर उसी समय उनकी शादी हुई. उनके शादी के सर्टिफिकेट में लिखा है - कि फ्रेडरिक जॉनसन ने, एना मुरे से विवाह किया. शादी के कुछ समय बाद न्यू-बेडफ़ोर्ड, मेसाचुसेट्स में फ्रेडरिक ने अपना नाम दुबारा बदला क्योंकि वहां पर “जॉनसन” एक बहुत ही आम नाम था. असल में उस समय जिस घर में वो किराये पर रह रहे थे उस मकान मालिक का नाम भी जॉनसन ही था. उनका नाम **“डगलस”** सर वाल्टर स्कॉट के लोकप्रिय उपन्यास **“द लेडी ऑफ़ द लेक”** के एक पात्र से लिया गया था.